ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 426-428
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

नयी कविता के सारसः केदारनाथ सिंह

हर्षलता शाह
हिंदी विभागाध्यक्षा, श्री शंकरलाल सुंदरबाई शासुन जैन महिला महाविद्यालय टी.नगर, चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 08.08.2020, Revised- 12.08.2020, Accepted - 15.08.2020 E-mail: harshalata@shasuncollege.edu.in

सारांश : *"नयी कविता ने मानव–भावना को छायावादी सौंदर्य के धड़कते हुए पालने से बलपूर्वक उठाकर उसे जीवन–समुद्र की उत्ताल लहरों में पेंग भरने को छोड़ दिया है, जहाँ वह साहस के साथ सुख–दुःख, आशा–निराशा के घात–प्रतिघातों में बढ़ती हुई युग–जीवन की आँधी–तूफानों का सामना कर सके, अंतर्वेदना से मुक्त होकर सामाजिक व्यथा के अनुभवों से परिपक्व बन सके। नयी कविता विश्व वर्चस्व से प्रेरणा ग्रहण करके तथा आज के प्रत्येक पल बदलते हुए युग–पट को अपने मुक्त छन्दों के संकेतों की तीव्र–मंद गति–लय में अभिव्यक्त कर, युग–मानव के लिए नवीन भाव–भूमि प्रस्तुत कर रही है।"– सुमित्रानंदन पंत*

कुंजीभूत शब्द– मानव–भावना, छायावादी, सौंदर्य, जीवन–समुद्र, उत्ताल, साहस, सुख–दुःख, आशा–निराशा, परिपक्व।

उपर्युक्त वाक्यांश में पंत ने बड़े ही सरल ढ़ंग से नयी कविता का स्वरूप स्पष्ट किया है। एक और अर्थ हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है कि नयी कविता ने पुराने का कभी भी केवल खण्डन नहीं किया है, बल्कि उसमें कुछ नवीनता को जोड़कर कार्य को सरल बनाने की ही कोशिश की है। अतः केवल टूटन को ही हम नहीं देखते बल्कि नवीन विचारधाराओं से भी अवगत होते हैं।

नयी कविता ने लय की तन्मयता को छोड़कर अर्थ की महत्ता पर ज्यादा जोर दिया है। जहाँ लौकिक जीवन और उसकी छोटी–से–छोटी जरूरतें पाठक के सामने उभारकर रख देती हैं। केदारजी की कविता संघर्ष करती है उस यथार्थ के साथ जो उस व्यक्ति का यथार्थ है, जो जुड़ा है अपनी उस मिट्टी के साथ जो खून बनकर बहती है उस कवि में।

आँखें खुलते ही मनुष्य देखता है उस प्रकाश को जो उसे मिलता तो है एक प्राकृतिक चीज से और वहाँ जीवन में आशा का प्रतीक बन जाता है। जमीन पक रही है' का सूर्य' इसका एक सजीव उदाहरण है–

"मेरी बस्ती के लोगों की दुनिया में
वह अकेली चीज है
जिस पर भरोसा किया जा सकता है
सिर्फ उस पर रोटी नहीं सेंकी जा सकती!"

आज के जीवन में मनुष्य– मनुष्य पर विश्वास कर जहाँ धोखा पाता है वहाँ वहीं वह इन प्राकृतिक चीजों से संबंध जोड़कर खुश हो जाता है जैसे– सूरज दादा, चन्दा मामा।

यहाँ पर केवल रोटी' का उद्धरण ही आया है परंतु रोटी' का जीवन में जो महत्त्व है उसको कवि सीधे नहीं कहता बल्कि झकझोर देता है आत्मा को जो मनुष्य के मन का द्वार है। जिसकी ओर प्रत्येक मनुष्य का ह्रदय आकर्षित हुए बिना नहीं रहता–

"मैं सिर्फ आपको आमंत्रित करूँगा
कि आप आएँ और मेरे साथ सीधे
उस आग तक चलें
उस चूल्हे तक–जहाँ वह पक रही है
एक अद्भुत ताप और गरिमा के साथ
समूची आग को गंध में बदलती चीज
वह पक रही है
आप विश्वास करें
मैं कविता नहीं कर रहा
सिर्फ आग की ओर इशारा कर रहा हूँ।"

आज का कवि जानता है आज का संदर्भ केवल कहने के लिए नहीं है बल्कि वह मुक्ति की तलाश के लिए है जिसकी सच्चाई के लिए कवि सदैव संघर्षरत रहता है–

"मैं पूरी ताकत के साथ
शब्दों को फेंकना चाहता हूँ आदमी की तरफ
यह जानते हुए कि आदमी का कुछ नहीं होगा
मैं भरी सड़क पर सुनना चाहता हूँ वह धमाका
जो शब्द और आदमी की टक्कर से पैदा होता है।"

यहाँ से देखो' काव्य–संग्रह की पहली कविता कविता क्या है?' संघर्ष का द्योतन कराती है जहाँ कवि सोचने के लिए स्तब्ध तो करता ही है ऊपर से उत्तर सोचने के लिए भी बाध्य कर देता है–

"कविता क्या है
हाथ की तरफ
उठा हुआ हाथ
देह की तरफ
झुकी हुई आत्मा
मृत्यु की तरफ

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

घूरती हुई आँखें।"

यहाँ पर कवि ने यथार्थ के संघर्ष के साथ उस आशा की किरणों को भी जोड़ा है जो एक–दूसरे के प्रत्युत्तर में है। कवि ने कविता का प्रारंभ भले ही प्रश्न रूपी निराशा से किया हो परंतु आशा रूपी उत्तर से उसे प्रत्युत्तर दिया है, जो एक सफल कवि की पहचान है।

कस्बे की धूल' में कवि ने एक छोटे से बिम्ब धूल' के द्वारा आशा की इमारत को बनाये रखा है–

"सच्चाई यह है कि उस सारे माहौल में
सिर्फ यह धूल है
सिर्फ इस धूल का लगातार उड़ना
जो मेरे यकीन को अब भी बचाये हुए है
नमक में
और पानी में
और पृथ्वी के भविष्य में
और दन्तकथाओं में।"

जहाँ कवि ने ढूँढ़ लिया है उस धूल को जिसे अपनत्व के रूप में हर कहीं पा लेते हैं वहीं दूसरी ओर उस संघर्षात्मक यथार्थ के लिए मरने वालों को कीड़े की मृत्यु' से जोड़ने में भी नहीं डरते–

"कीड़े तो मरते रहते हैं
हर पल हर क्षण
दुनिया को कुछ और साफ सुंदर करने को
मर जाते हैं कीड़े
मरना उसका
सुंदरता के हित में हैं
फिर क्यों होती है पीड़ा
जबकि सामने बिना चीख के
मरा पड़ा है कीड़ा।"

अकाल में सारस' संग्रह की पहली कविता मातृभाषा' में कवि ने एक ऐसे यथार्थ संघर्ष को बताया है जिससे प्रत्येक नागरिक कहीं–न–कहीं जूझ रहा है–

"ओ मेरी भाषा
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते–रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा।"

आज प्रत्येक नागरिक अपनी मातृभाषा' के लिए भले ही आत्मा से कलप रहा हो, परंतु रोजी–रोटी के लिए उसे मारता जा रहा है और जी रहा है उस संघर्ष के साथ जो उसकी आत्मा को कतई कबूल नहीं है । यदि वह ऐसा नहीं करता है तो निराला को याद करते हुए' लिखते हैं–

"रोज उसी दर्जी के घर तक
एक प्रश्न से सौ उत्तर तक
रोज कहीं टाँके पड़ते हैं
रोज उघड़ जाती है सीवन
दुखता रहता है अब जीवन।"

यहाँ यह बात स्पष्ट है कि हर वह व्यक्ति संघर्षरत है जो यथार्थ मार्ग पर अग्रसर है। छोटे शहर की एक दोपहर' में कवि ने शब्द और व्याकरण के संघर्ष को उद्घाटित किया है–

"ठण्ड से नहीं मरते शब्द
वे मर जाते हैं साहस की कमी से
कई बार मौसम की नमी से
मर जाते हैं शब्द।"

इन्हीं शब्दों से बनती है कविता परंतु फिर भी कितने ही संघर्षों को झेलते भी कविता उस संघर्ष को जीतने की उम्मीद से आगे बढ़ती है और पूरी कोशिश करती है कि उससे उसका संबंध बना रहे–

"और जब सारा शहर सो जाता है
तो इन सारी कविताओं में भरा अवसाद
दुनिया पर बरसता है सारी–सारी रात
पर मौसम चाहे खराब हो
उम्मीद नहीं छोड़तीं कविताएँ
वे किसी अवश्य खिड़की से चुपचाप देखती रहती हैं
हर आते–जाते को और बुदबुदाती हैं धन्यवाद! धन्यवाद!"

एक कवि या कविता कितने ही संघर्षों को क्यों न झेले फिर भी वह अपने आपको दूसरों के लिए ही समर्पित कर देती है–

"लेकिन प्रिय पाठक एक कवि का काम चलता नहीं है
अगले जन्म के बिना
वह यही तो कहता है अधिक–से–अधिक
कि लोगों में और यहाँ तक कि चीजों में भी
हमेशा बनी रहे बार–बार जनम–जनम लेते रहने की इच्छा।"

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है नौकरी जिसके कारण उसका घर चलता है लेकिन वह भी बड़ी मुश्किल से उसे मिलती है। परंतु जब कवि के ऊपर यह समस्या आती है तो यह एक विडम्बना बन जाती है, कुरुक्षेत्र में चाय' कविता में इसका दृश्य देख सकते हैं–

"दिल्ली से एक बड़े बुजुर्ग कवि ने
लिखा था–बेकार हो आ जाओ
काम मिल सकता है कुरुक्षेत्र में
कुरुक्षेत्र में काम? पहले मैं चौंका
क्योंकि महाभारत पढ़ चुका था।"

दूसरी ओर कवि ढूँढ़ता चाहते हैं उस यथार्थात्मक गूँज' को

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

जिसे वह पा लेते हैं–

"इस घर में एक गूँज है
एक बरसों पुरानी थकी हुई गूँज
जिसे छिपाने से कोई फायदा नहीं
उसके बारे में सारे वृद्धजन
और मेरी भाषा के लगभग सारे पंचांग
चुपचाप सहमत हैं कि वह मेरे समय की बर्फ पर।"
किसी हिममानव के पैरों के चलने की आवाज है।"

वहीं जब एक नियम लागू होता है तो एक ऐसा यथार्थ जन्मता है जिसे हम देखकर भी अनदेखा कर देते हैं–

"गरीब को आज भी आत्मा पर भरोसा है
जब कुछ नहीं मिलता तो उसी को टोकरी में रखकर
वह सूदखोर के पास जाता है।"

एक कवि जो सामाजिक विडंबनाओं को दिल में सोचते–सोचते समाज की जटिल परिस्थितियों को महसूस कर काँप जाता है और स्वयं से ही स्वयं को अलग कर देना चाहता है। कवि अपनी परिस्थिति से इतना घबरा जाते हैं कि वह अपने कविपन को अपने से अलग कर देना चाहते हैं। जिसके लिए अपने आप का ही बँटवारा' कर सरकार को एक अर्जी दे देना चाहते हैं–

"सोचता हूँ सरकार को दे दूँ एक अर्जी
कि यह जो कवि है मेरा भाई जो बरसों से रहता है
मेरी ही साँस
मेरे ही नाम से अच्छा हो, अगली बरसात से पहले
उसे दे दिया जाये कोई अलग घर कोई अलग नंबर।"

आज की भाषाओं में शब्द अनेक हों परंतु लाय–ताल, मेल–जोल के कारण कहीं–कहीं शब्दों के साथ न्याय नहीं हो पा रहा है। नयी कविता में इसका आशय देखा जा सकता है। इसे देखकर एक सुदृढ़ कवि काँप जाता है और प्रचार करना चाहता है शब्दों का जिसके लिए वह विज्ञापन' का सहारा लेता है–

"मुझे सख्त जरूरत है कुछ चीजों की
एक पाठशाला मुजे चाहिए जहाँ सारे के सारे अक्षर
स्मृति से झर जाएँ और बची रहे अन्दर एक ताजा
निरक्षरता जहाँ से हर वर्णमाला फिर से शुरू हो।"

नयी कविता का पाठक व लेखक प्रस्तुति के बीच के संघर्ष को झेल रहा है क्योंकि आज लेखक की किस भाषा को पाठक पढ़ना चाहेगा यह वह नहीं जानता इसलिए लेखकों की समस्या पर सरकारी प्रतिनिधि का बयान'–

"पक्षियों के दुख का उसे पता चल गया है पर लेखक की समस्या हवा की समस्या की तरह बेहद उलझी है शब्द उसकी एक समस्या और वह बाजार में भरा पड़ा है रह गया कागज सो लाल–हरा–पीला–बैंगनी पृथ्वी पर प्रतिभा के जितने भी रंग हैं उतने रंगों में कहीं भी मिल सकता है।"

प्रश्नकाल' में कवि भाषा व चुप के संघर्ष को उद्घाटित करता है। कवि बताना चाहता है कि कभी–कभी भाषा से ज्यादा चुप का महत्त्व होता है। परंतु वह चुप इतना गहन होता है कि जिसके आगे भाषा भी ठिठक जाती है–

"जितनी वह चुप थी बस उतनी ही भाषा बची थी मेरे पास
बस उतना ही अनन्त मेरी झोली में थी जितना जल्दी–जल्दी
ढ़ल रहा था दिन।" कुछ और टुकड़े' में एक टुकड़ा भाषा व चुप के बीच की उस कड़ी को बताना चाहता है जिससे दोनों ही मजबूत बनते हैं–

"अकेली चुप्पी भयानक चीज है जैसे हवा में गैंडे का अकेला सींग पर यदि दो लोग चुप हों पास–पास बैठे हुए तो उतनी देर भाषा के गर्भ में चुपचाप बनती रहती है एक और भाषा।"

दो विपरीत वस्तुओं की तुलना नयी कविता की एक ऐसी पहल है जो पाठक को झकझोरे बगैर नहीं रहती। केदार जी की एक लंबी कविता है बाघ' जो इक्कीस अनुसंगों में लिखी गयी है। उसके आठवें अनुसंग में केदार जी ने प्यार व बाघ की तुलना की है जो पाठक को बहुत कुछ सोचने को बाध्य कर देती है–

"उसका ख्याल था कि यह जो प्यार है
यह जो हम करते हैं एक–दूसरे से या फिर नहीं करते
यह भी एक बाघ है और इतना करीब कि ध्यान से
सुनो तो तुम अपनी छाती में सुन सकते हो
उसके भारी पंजों के चलने की आवाजें।"

केदार जी ने अपनी कविता में एक सारस की तरह उन सभी दूध रूपी सरल, सहज, स्पष्ट विचारों को देकर पाठक को समसामयिक परिप्रेक्ष्य की चुनौतियों पर पुनर्विचार करने को बाध्य किया है। यह एक सफल कवि की पहचान है। यह कहना कतई गलत न होगा कि नयी कविता की कवियों में केदार जी ऐसे कवि हैं जो कविता में विषय को सामने रखकर बातें करते हैं और मनाते हैं–

"उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए मैंने सोचा दुनिया को हाथ की तरह गर्म और सुंदर होना चाहिए।"

*****